किसान भाई खीरे की उन्नत खेती

अजय कुमार गौड़
(सहायक प्राध्यापक) सस्यविज्ञान विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय, इन्दौर ,मध्यप्रदेश

परिचयः

खीरा वैज्ञानिक नाम जायद की एक प्रमुख फसल है, सलाद के रूप में संपूर्ण विश्व में खीरे का विशेष महत्व है। खीरे का सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की मिठाइयां भी तैयार की जाती है। पेट की गड़बड़ी तथा कब्ज में भी खीरे को औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। खीरे में अधिक मात्रा में फाइबर मौजूद होता है खीरा कब्ज दूर करता है। पीलिया ,प्यास , ज्वर, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोषचर्म रोग में लाभदायक है, खीरे का रस पथरी में लाभदायक है। पेशाब में जलन, रुकावट और मधुमेंह मैं भी लाभदायक है। घुटनों में दर्द को दूर करने के लिए भोजन में खीरे का सेवन अधिक मात्रा में करें।

खीरे की खेती विश्व में कई देशों में अत्यंत प्राचीन काल से की जा रही है, खीरे का जन्म स्थान भारत माना जाता है यहीं से यह विश्व के अन्य देशों में इसका प्रचार प्रसार हुआ है, 3000 वर्ष पूर्व से ही इसकी खेती की जा रही है। इस वर्ष की फसलों में तेज गर्मी और शुष्क हवाएं सहन करने की अच्छी क्षमता होती है। उत्तर भारत में यह फसलें मुख्यतः मार्च–अप्रैल में बोई जाती है। उदाहरणः तरबूज, खीरा, ककड़ी।

महत्व

खीरे के फल का उपयोग कच्चे सलाद या सब्जियों के रूप में किया जाता है, खीरे का उपवास के समय भी फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है, इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की मिठाइयां व व्यंजन भी तैयार किए जाते हैं, पेट के विभिन्न रोगों में भी गिरे का औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है, खीरा कब्ज दूर करता है पीलिया, प्याज, ज्वार, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोष, चर्म रोग में लाभदायक है खीरे का पथरी के रोग, पेशाब में जलन, रुकावट और मधुमेह में भी लाभदायक है, इसका उपयोग आंखों के उपचार में किया जाता है यह एक बेल जैसा पौधा है जो गर्मियों में सब्जी के रूप में पूरे भारत में उगाया जाता है धीरे के बीच का उपयोग तेल निकालने के लिए किया जाता है, जो शरीर और मस्तिष्क के लिए बहुत अच्छा होता है। खीरे में 96% पानी होता है जो गर्मी के मौसम में अच्छा होता है इसको मिट्टी की अलग–अलग किस्में जैसे कि रेतीली दोमटसे भारी मिट्टी में उगाया जा सकता है खीरे की फसल के लिए दोमट मिट्टी जिसमें जैविक पोषक तत्वों की मात्रा हो और पानी का अच्छा निकास हो उपयुक्त रहता है खीरे की खेती के लिए मिट्टी का पी एच 6–7 के मध्य होना चाहिए।

खेत की तैयारी

खीरे की खेती के लिए, अच्छी तरह से तैयार और नदीन रहित खेत की जरूरत होती है। मिट्टी को अच्छी तरह से भूरा भूरा बनाने के लिए, रोपाई से पहले तीन से चार बार खेत की अच्छी प्रकार से जुताई करें, खीरे की खेती नदियों तालाबों के किनारे भी की जा सकती है और इसमें पानी निकालने के लिए नाले बनाना चाहिए जिससे पानी इकट्ठा ना हो सके।

उन्नतशील किस्में

पंजाब नवीन खीरे की अच्छी किस्म है इस किस्म में कड़वाहट कम होती है और इसका बीज भी खाने लायक होता है इसकी फसल 70 दो दिन में छोड़ आई लायक हो जाती है इसकी औसतन पैदावार 45 सेफ्टी कुंटल प्रति एकड़ तक होती है हिमांगी, जापानी लॉन्ग ग्रीन, जोवइटसेट, पुणे खेरा, शीतलफाइन सेट, खीरा 90, खीरा 75, हाइब्रिड व हाइब्रिड दो कल्याणपुर हरा खीरा इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रसिद्ध किस्म

पंजाब खीराः यह किस्म 2018 में जारी की गई। इस किस्म के फल हरे गहरे रंग के होते हैं। जिसका स्वाद कम कड़वा और औसतन भार वन टू 5 ग्राम होता है इस किस्म के खेलों की औसतन लंबाई 13 से 15 सेंटीमीटर होती है। इसके तूड़ाई सितंबर 4 जनवरी महीने में फसल बोने से 45 से 60 दिनों के बाद की जा सकती है। सितंबर महीने में वही फसल का औसतन पैदावार 304 क्विंटल प्रति एकड़ और जनवरी महीने में बोई फसल की उपज 370 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

पंजाब नवीनः यह किस में 2008 में तैयार की गई है। इस किस्म के पौधे के पत्तों का रंग

गहरा हरा फलों का आकार बराबर बेलनाकार और तल मुलायम और फीखें हरे रंग का होता है। इसके फल कुरकुरे और कड़वापन रहित होते और बीज रहित होते हैं। इसमें विटामिन सी की उच्च मात्रा पाई जाती है और सूखे पदार्थ की मात्रा ज्यादा होती है। यह किस्म 68 दिनों में पक जाती है इसके फल स्वादिष्ट रंग और रूप आकर्षित आकार और बनावट बढ़िया होती है। इस किस्म की औसतन पै. दावार 70 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

बिजाई का ढंग

बीज को ढाई मीटर की चोडी बेड पर दो–दोफुट के फासले पर बोया जा सकता खीरे की बिजाई उठे हुए पेड़ों के ऊपर करना ज्यादा अच्छा है। इसमें मेढ़से मेढ़ की दूरी एक से डेढ़ मीटर रहते हैं, जबकि पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर रहती है विदाई करते समय एक जगह से पर कम से कम 2 बीज लगाएं।

खाद एवं उर्वरक

खीरे की अच्छी फसल के लिए खेत की तैयारी करते समय ही 6 टन गोबर की अच्छी तरह साड़ी खाद खेत में जुताई के समय मिला दें 20 किलोग्राम नाइट्रोजन 12 किलोग्राम फास्फोरस व 10 किलोग्राम पोटाश की मात्रा खीरे के लिए पर्याप्त रहती है खेत में बिजाई के समय 1 बटा 3 नाइट्रोजन, फास्फोरस की पूरी मात्रा तथा पोटाश की पूरी मात्रा डाल दें बची हुई नाइट्रोजन को दो बार में बिजाई के 1 महीने बाद व फल आने पर खेत की नालियों में डालकर मिट्टी चढ़ा दें।

सिंचाई

गर्मी के मौसम में इसको बार–बार सिंचाई की जरूरत होती है, और बारिश के मौसम में सिंचाई की जरूरत नहीं होती हैं द्य इसका कुल 10 से 12 सिंचाई की आवश्यकता होती है।बिजाई से पहले एक सिंचाई जरूरी होती है इसके बाद 2 से 3 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें दूसरी बिजाई के बाद 4 से 5 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण

किसी भी फसल की अच्छी पैदावार लेने के लिए खेत में खरपतवार ओं का नियंत्रण करना बहुत जरूरी है, इस तरह खीरे की भी अच्छी पैदावार लेने के लिए खेत का खरपतवार ओं से साफ रहना चाहिए इसके लिए बरसात में तीन से चार बार खेत की नींद आए गुड़ाई करनी चाहिए।

रोग नियंत्रण

मोजैक वायरसः खीरे में विषाणु रोग एक आम रोग होता है यह रोग पौधों के पत्तियों से शुरू होती है और इसका प्रभाव फलों पर भी पड़ता है फलों का आकार छोटी और टेढ़ी–मेढ़ी हो जाती है, रोग को नीम का काढ़ा या गोमूत्र में माइक्रो जाइम को मिलाकर इसे 250 मिली मीटर प्रति एकड़ फसलों पर छिड़काव करने से दूर किया जा सकता है।

एंथ्रेक्नोजः यह एक रोग फूफदजनित रोग हे यह रोग मौसम के बदलाव हो के कारण होता है इस रोग में फलो तथा पतियाँ पर धबे हो जाते हें इस रोग को नीम का काढ़ा या गौमूत्र में माइक्रो झाइम को मला कर इसे 250 मी. लीटर प्रति एकड फसलो पर छिडकाव करने से दूर किया जा सकता हें।

चूर्णिल असिताः यह रोग ऐरीसाइफी सिकोरेसिएरम नाम के एक फफूंद के कारण होता हें यह रोग मुख्यत पतियों पर होती है और यह धीरे धीरे तना फूल और फलो को प्रभावित करती हें इस बीमारी पतियों के ऊपर सफेद धबे उभर जाते है और धीरे ीरे ये धबे बड़ने लगते है सर्वगी कवक नाशी बाविस्टीन 0.05 प्रतिशत (0.5 प्रतिशत ग्राम प्रति लीटर जल) घोल के तीन छिडकाव 15 दिन के अतर पर करने चाहीये ।

किट नियंत्रण

एफीड (चीपके): ये बहुत ही छोटे आकार के किट होते हें ये किट पौधे के छोटे हिसे पर हमला करते है तथा उनसे रस चसूते है, इन किटो की संख्या बहुत तेजी से बडती है एव इसके कोप की वजह से पोधो की पतियों पीलापन लिए रगं में बदलने लगती है इसकी रोकथाम के लये 1 ली0/हेक्टेयर दर से मेंटे. ासिस्टा 25 ई. सी. अथवा डाईमेक्रों 100 ई. सी. या नवूाक्रोनन 40 ई. सी. का 600 लीटर पानी के साथ छिडकाव करना चाहीए, पांच से छह लीटर मठा 100–150 पानी मिलाकर एक एकड़ खेत में छिड़काव करने से इस किट की रोकथाम की जा सकती है।

रेडबीटल

ये लाल रगं तथा 5–8 सेमी लबे आकार के किट होते है ये किट पतियों के मध्य वाले भाग को खा जाती है जिसके कारण पौधों का विकास अच्छी प्रकार से नही होता है बीमारी के लिए किट–विरोधी जातीय को प्रयोग करना चाहीए तथा कीटो के लिए डी. टी .टी . पाउडर का छिड्काव करना चाहीए।

भंडारण

तरबूजे को तोड़ने के बाद 2–3 सप्ताह आराम से रखा जा सकता है. फलों को ध्यान से ले जाना चाहीए, हाथ से ले जाने में गिरकर टूटने का भी भय रहता है फल को 2 से 5°C तापमान पर रखा जा सकता है अधिक लम्बे समय के लिए रफेरीजरटेर में रखा जा सकता है।

'उपज/पैदावार'

उपज निर्भर करती है किसान द्वारा अपनाए गए तौर तरीके और फसल को मिले सभी पौषक तत्व पर खीरे को कोमल एवं मुलायम अवस्था में तोड़ना चाहीए। फल की तुड़ाई 2–3 दिनो के अन्तराल पर करते रहना चाहिए। देशी खीरे की औसत उपज 60 से 75 कुन्टल प्रति हेक्टेयर तथा हाइब्रिड खीरे की औसत उपज 130–220 कुन्टल प्रति हेक्टेयर ।